अध्याय–द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण होता है। चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो, शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है। क्योंकि यह समस्या की पूरी तस्वीर उभारने में मदद् करता है। संबधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा बनाने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता जब तक शोधकर्ता को ज्ञान न हो की उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस प्रविधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को किस क्षेत्र् में वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है, तथा निम्नलिखित उद्देश्य पूर्ण करती है।

1. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है की अनुसंधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया

जा सकता है।

3. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को पूर्व में किए गये शोधकार्य की पुनरावृत्ति करने से रोकता है।

4. पूर्व अनुसंधानों से अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।

5. उपर्युक्त शोध विधियों के चयन में मदद् करना है।

6. परिकल्पना को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायक होता है।

7. तुलनात्मक अध्ययन व तत्संबधी व्याख्या हेतु आंकड़ो का निर्धारण करने में मदद् करता है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 शोध से संबंधित साहित्य

1. शर्मा सत्यनारायण (1996) ''एस.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का अध्ययन किया और पाया कि मुख्यतः कक्षा शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण, विद्यालय प्रशासन और संगठन तथा अन्य समस्याओं अधिक तर हो ता शिक्षण कार्य नीरस लगता है।

2. चौपड़ा आर.के. (1988)– ''स्वतंत्र भारत में अध्यापकों की स्थिति'' का अध्ययन किया है। शिक्षक के विभिन्न स्थितियों का अध्ययन करने के लिए प्रतिशत, औसत तथा माध्यिका मानों का उपयोग किया है। इस अध्ययन में यह पाया गया है कि शिक्षक आर्थिक दृष्टि से निर्धन है। सामाजिक दृष्टि से उसका दर्जा नीचा है। व्यावसायिक दृष्टि से उसका काम कठोर परिश्रम करने का है और प्रशासनिक दृष्टि से उनके साथ बहुत भद्दा व्यवहार किया जाता है।

3. लाल संग्लीयनी (1991)- "हाईस्कूल के अध्यापकों को आर्थिक, सामाजिक, तथा प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन्" किया है। इससे यह परिणाम निकलते है कि प्रायवेट स्कूल के अध्यापक अपने आप को अधिक असुरक्षित महसूस करते है।

4. एन्डरसन (1991)- "इंग्लैंड के 91 शिक्षकों का अध्ययन" किया है पाच सप्ताह के समायावधि में उन्होनें कार्यो से उत्पन्न तनाव को आधार मानकर ध्यान साधना के माध्यम से पूर्व परीक्षण तथा पश्चय परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन कर पाया कि ध्यान साधना से कार्यो के तनाव को 60 प्रतिशत कम किया जा सकता है।

5. भट्टू, बी.के. और चंद्रशेखर (1992) "एकल तथा द्वि अध्यापक वाले प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को द्वारा अनुभव की गयी समस्याओं को पहचानने के लिए अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया है कि एक तथा द्विअध्यापक वाले स्कूलों में पढ़ाने की, व्यवस्थापन, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक समस्याऐं आती हैं।

6. टैवर्स एवं कुचर (1997)- इंग्लैड तथा फ्रांस के 800 शिक्षकों का अध्ययन किया तथा पाया कि, कार्यो से तनाव के कारण 22 प्रतिशत शिक्षक विभिन्न प्रकार की, बीमारियों से जूझ रहे है।

   इंग्लैण्ड के शिक्षक अधिक समय कार्य करने तथा राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण तनाव ग्रस्त पाये गये। बदलते वातावरण का असर भी एक घटक है जो कार्यो के तनाव को बढ़ाता है।

7. हैरीश (1999)- "अमेरिका के प्राथमिक शाला शिक्षकों का अध्ययन किया था। इसके लिए उन्होने "विल्सन टेस्ट प्रोफाइल" शिक्षकों के लिए बनाई गई। इसका उपयोग कर अध्ययन किया और पाया की, शिक्षकों की अपेक्षा प्रधानाध्यापकों पर कार्यो का अधिक तनाव है तथा अन्य शिक्षकों पर कम तनाव है।

8. तिलक राज पंकज (2002)- "शिक्षकों की गैर शैक्षिक कार्यो में प्रतिनियुक्ति" इसमें शिक्षकों को अध्यापन के अलावा गैर शैक्षिक कार्य करने पड़ते है। इसका अध्ययन किया हैं इससे शिक्षक अपने काम से विमुख हो रहा है। शिक्षकों की ऊर्जा व क्षमताओं का सही इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। शिक्षकों के बार-बार गैर शिक्षक कार्यो से समुदाय में जाने से आम आदमी की नजर में उसके सम्मान, गरिमा, व्यक्तित्व एवं विश्वसनीयता में कमी आ रही है।

9. रश्मि जैन और असरार-उल-गनी (2005)- "शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में शिक्षण कार्य के प्रति उदासीनता के कारणों का अध्ययन" इसमें शिक्षकों को शिक्षण कार्य के प्रति असंतुष्टि का अध्ययन, ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों में उदासीनता के कारणों का पता किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि, शिक्षण कार्यो के प्रति असंतुष्ट है।

10. केवट आर.एन. (2005)- "शिक्षक-शिक्षिकाओं के जीवन एंव व्यावसायिक संतुष्टि का सहसंबंध" का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में यह पाया गया है कि, संविदा नियुक्तियों की प्रधानता, बेरोजगारी एवं एप्रोच की कमी, भ्रष्टाचार एवं राजनैतिक अपराधीकरण, व्यवसाय, सुरक्षा एवं पदोन्नति का लंबा इंतजार, आवासीय सुविधाओं का अभाव, शिक्षण स्तर कार्यो की अनिवार्यता, ट्रांसफर का भय आदि कारणों से जीवन एवं व्यावसायिक संतुष्टी में परेशानी आती है।